अब जाहेर हुई सृष्टब्रह्म की, और जाहेर वतन ब्रह्म
अर्स उमत जाहेर हुई, हुई जाहेर सूरत खसम।। ४४ ।।

अब ब्रह्मसृष्टि जाहिर हो गई है। परमधाम और पारब्रह्म का पता सबको लग गया है। कुरान के अनुसार अर्श की उम्मत (मोमिन) जाहिर हो गए हैं। खुदा की सूरत का पता लग गया है।

खेल देखाया ब्रह्मसृष्ट को, करके हुकम आप।
ए झूठा खेल कायम किया, करके इत मिलाप।। ४५ ।।

आप स्वयं पारब्रह्म ने हुकम करके ब्रह्मसृष्टि को खेल दिखाया और इसलिए यहां आकर झूठे खेल को कायम (अखण्ड) किया।

महामत कहे ब्रह्मसृष्ट को, ऐसा हुआ न होसी कब।
गुझ सब जाहेर किया, ए जो लीला जाहेर हुई अब।। ४६ ।।

श्री महामतिजी ब्रह्मसृष्टि को कहते हैं कि ऐसा न कभी हुआ है और न कभी होगा। सब धर्मग्रन्थों के छिपे भेदों को जाहिर कर दिया है।

।। प्रकरण ।। ७३ ।। चौपाई ।। ९५९ ।।

राग श्री

भवजल चौदे भवन, निराकार पाल चौफेर।
त्रिगुन लेहेरी निरगुन की, उठें मोह अहं अंधेर।। १ ।।

चौदह लोकों (भवसागर) के चारों तरफ निराकार का आवरण है। इसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश, निराकार की लहरें, मोह और अहंकार के अंधेरों से बनी हैं।

तान तीखे ग्यान इलम के, दुन्द भमरियां अकल।
बहें पंद पैंडे आड़े उलटे, झूठ अथाह मोह जल।। २ ।।

इसमें शक और इलम की भंवर संशय से भरी है। जिनसे धर्म पैंडे इस झूठे भवसागर में चल रहे हैं।

तामें बड़े जीव मोह जल के, मगर मच्छ विक्राल।
बड़ा छोटे को निगलत, एक दूजे को काल।। ३ ।।

इस भवसागर में बड़े-बड़े जीव हैं। मगरमच्छ हैं। यह एक दूसरे के काल हैं। बड़े छोटों को खा जाते हैं। यहां बड़े-बड़ें आचार्य, पीठाधीश्वर और गादीपति अपने-अपने चेलों को लूट रहे हैं।

घाट ना पाई बाट किने, दिस न काहूं द्वार।
ऊपर तले मांहें बाहेर, गए कर कर खाली विचार।। ४ ।।

इस भवसागर को किसी ने नहीं पाया। इससे निकलने का रास्ता, ऊपर, नीचे, अन्दर, बाहर खूब विचार कर खोजने पर भी निकलने का दरवाजा तथा दिशा नहीं मिली।

जीवें आतम अंधी करी, मिल अंतस्करन अंधेर।
गिरदवाए अंधी इंद्रियां, तिन लई आतम को घेर।। ५ ।।

जीव ने अंतस्करण से मिलकर आत्मा को अन्धा कर रखा है। आत्मा को अन्धी इन्द्रियों ने चारों तरफ से घेर रखा है।

Nijanand App

पांच तत्व तारा ससि सूर फिरें, फिरें त्रिगुन निरगुन।
पुरुख प्रकृति यामें फिरें, निराकार निरंजन सुंन।।६ ।।

इस भवसागर में पांच तत्व, सितारे, चन्द्रमा और सूर्य घूमते हैं। त्रिगुण, निराकार, पुरुष, प्रकृति जिनको निराकार, निरंजन शून्य कहते हैं, सब घूमते हैं।

ए चौदे पल में पैदा किए, पांच तत्व गुन निरगुन।
याही पल में फना हुए, निराकार सुन्य निरंजन।।७ ।।

चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड, पांच तत्व, तीन गुण तथा निराकार एक पल में पैदा होते हैं और उसी पल में नष्ट होकर शून्य में समा जाते हैं। यह आंखों से दिखाई नहीं देता।

ए चौदे चुटकी में चल जासी, गुन निरगुन सुन्य तत्व।
निराकार निरंजन सामिल, उड़ जासी ज्यों असत।।८।।

गुण, निरगुण, शून्य, पांच तत्व, निराकार, निरंजन और चौदह लोक झूठ की तरह चुटकी बजाते ही समाप्त हो जाएंगे।

देत काल परिकरमा इनकी, दोऊ तिमर तेज देखाए।
गिनती सरत पोहोंचाए के, आखिर सबे उड़ाए।।९ ।।

इन सबको काल ने घेर रखा है। अन्धकार और प्रकाश, रात और दिन दिखाकर सांसों की गिनती पूरी करके सबको उड़ा देता है।

ए इंड जो पैदा किया, ए जो विश्व चौदे भवन।
इनमें सुध न काहू को, ए उपजाए किन।।१० ।।

इन चौदह लोकों को जिसने पैदा किया है उसकी सुध इसमें किसी को नहीं मिली।

हम भी आए इन खेल में, बुध न कछुए सुध।
धनी आए अछरातीत, मोहे जगाई कई बिध।।११ ।।

हम भी तो इस खेल में हैं, पर हमें न कुछ होश है और न कुछ समझ में आता है। अक्षरातीत धाम धनी ने यहां आकर मुझे कई प्रकार से जागृत किया।

कह्या खेल किया तुम कारने, ए जो मांग्या खेल तुम।
खेल देख के घर चलो, आए बुलावन हम।।१२ ।।

धनी ने मुझे कहा कि जो खेल तुमने मांगा था, वह तुम्हारे वास्ते बनाया है। अब खेल देखकर घर चलो। हम बुलाने आए हैं।

निबेरा खीर नीर का, सास्त्र सबों का सार।
अठोतर सौ पख को, कर दियो निरवार।।१३ ।।

सब शास्त्रों का सार, माया और ब्रह्म की पहचान करा दी तथा एक सौ आठ पक्ष का भेद भी बता दिया।

कई साखें सास्त्र साधुन की, दे दे कराई पेहेचान।
मूल सरूप देखाए धाम के, कर सनमंध दियो ईमान।।१४ ।।

कई साधुओं की वाणी और शास्त्रों की गवाही देकर पहचान कराई तथा मूल स्वरूप दिखाकर अपनी निसबत बताई। इससे हमारा ईमान और दृढ़ किया।

Nijanand App

अंतस्करन में रोसनी, और रोसन करी आतम।
गुन पख इन्द्री रोसन, ऐसा बरस्या नूर खसम।। १५ ।।

हमारे मन, चित्त, बुद्धि और अहंकार में ज्ञान दिया और आत्मा की पहचान कराई। गुण-पक्ष (अंतःकरण) इन्द्रियों को जागृत करके धनी ने ऐसी कृपा की वर्षा की।

बोहोत सोर किया मुझ ऊपर, रोए रोए कहे वचन।
अपनायत अपनी जान के, मोहे खोल दिए द्वार वतन।। १६ ।।

मेरे धनी ने बहुत रो-रोकर, पुकार-पुकारकर समझाया और मुझे अपनी जानकर धाम के दरवाजे खोल दिए।

क्यों कर कहूं मैं हेत की, जो धनिऐं किए भांत भांत।
जगाई धाम देखावने, कई विध करी एकांत।। १७ ।।

धनी ने जो तरह-तरह से मुझ पर कृपा की है उसको मै कैसे कहूं? उन्होंने एकान्त में बैठकर धाम दिखाने के लिए धाम की चर्चा की और मुझे जागृत किया।

जिनसों सब विध समझिए, ऐसी दई मोहे सुध।
सास्त्रों आगूं यों कह्या, धनी ले आवसी जाग्रत बुध।। १८ ।।

उनकी कृपा से सब कुछ मुझे जानकारी हो जाए, ऐसा ज्ञान मुझे दिया। शास्त्रों में पहले से ही लिखवा रखा था कि धनी (पारब्रह्म) जागृत बुद्धि लेकर आएंगे।

अनेक लिखी निसानियां, करावने हमारी पेहेचान।
जाने सब कोई सेवें इनको, कई किए साख निसान।। १९ ।।

हमारी पहचान कराने के वास्ते ही सब शास्त्रों में निशान लिखाए, जिससे सबको हमारी पहचान हो जाए और वह हमारी सेवा करें।

यों कई बिध समझाई दुनियां, देने हम पर ईमान इस्क।
धनी नाम खिताब दे अपनों, मुझे बैठाई कर हक।। २० ।।

दुनियां को हम पर ईमान और इश्क लाने के लिए कई तरह से समझाया। धनी ने मुझे अपना ही नाम और खिताब देकर मुझे प्राणनाथ बनाकर बिठा दिया।

कई दिन सुनाई मुझ को, श्री मुख की चरचा।
और सबे विध समझी, पर लग्या न कलेजे घा।। २१ ।।

धनी ने अपने श्रीमुख से बहुत दिन तक (श्री देवचन्द्रजी के तन में बैठकर) चर्चा सुनाई। मैं हर तरह समझ भी गई, परन्तु कलेजे में चोट नहीं लगी।

चौदे भवन के जो धनी, विश्व पूजत सब ताए।
ए सुध नहीं काहू को, कोई और है इसदाए।। २२ ।।

चौदह लोकों के मालिक, आदि नारायण जिनकी पूजा सारा संसार करता है उनको तथा अन्य को इसकी सुध नहीं है कि इनके अलावा कोई और भी पारब्रह्म है।

Nijanand App

त्रिगुन इस ब्रह्मांड के, तिनको भी ए सुध नाहें।
कहां से आए हम कौन हैं, कौन इन जिमी मांहें।। २३ ।।

इस ब्रह्माण्ड के देवता—ब्रह्मा, विष्णु, महेश को भी खबर नहीं है कि वह कौन हैं? कहां से आए हैं? और यह ब्रह्माण्ड कौन सा है?

महाविष्णु सुन्य प्रकृती, निराकार निरंजन।
ए काल द्वैत को कोहै, ए सुध नहीं त्रिगुन।। २४ ।।

महाविष्णु (आदि नारायण), शून्य, प्रकृति, निराकार, निरंजन, सबको समाप्त करने वाला कौन काल का रूप है। यह खबर त्रिगुण को नहीं है।

प्रले पैदा की सुध नहीं, तो ए क्यों जाने अछर।
लोक जिमी आसमान के, इनकी याही बीच नजर।। २५ ।।

जब इनको ब्रह्माण्ड के बनने और मिटने की सुध नहीं है, तो वह इसे बनाने वाले अक्षर ब्रह्म को कैसे जान सकते हैं? जमीन के देवी-देवता तथा संसार के लोगों की नजर संसार में ही है, अर्थात् वह मानते हैं कि परमात्मा संसार में ही है।

अछर सरूप के पल में, ऐसे कई कोट इंड उपजे।
पल में पैदा करके, फेर वाही पल में खपे।। २६ ।।

अक्षर के एक पल में करोड़ों ब्रह्माण्ड बनते हैं और मिट जाते हैं।

ए जो न्यारा पारब्रह्म, इनकी भी करी रोसन।
ए जो अछर अद्वैत, भी कहे तिनके पार वचन।। २७ ।।

अक्षर से भी न्यारा पारब्रह्म अक्षरातीत है। उनकी भी जानकारी देती हूं। अक्षर ब्रह्म अनादि है। अक्षरातीत इनसे भी परे है।

सो अछर मेरे धनी के, नित आवें दरसन।
ए लीला इन भांत की, इत होत सदा बरतन।। २८ ।।

ऐसे अनादि अक्षर ब्रह्म हमारे धनी अक्षरातीत के दर्शन करने रोज आते हैं। इस प्रकार की दर्शन लीला सदा होती है।

अछरातीत के मोहोल में, प्रेम इस्क बरतत।
सो सुध अछर को नहीं, जो किन विध केलि करत।। २९ ।।

अक्षरातीत के मोहोल (परमधाम रंग-महल) में प्रेम और इश्क की जो लीला होती है, उसकी खबर अक्षर को नहीं है।

सो धाम वतन मोहे कर दियो, मेरो अछरातीत धनी।
ब्रह्म सृष्ट मिनें सिरोमन, मैं भई सोहागिनी।। ३० ।।

उस सतगुरु ने धाम और मेरे धनी अक्षरातीत की पहचान करा दी जिससे मैं सुहागिनी तथा ब्रह्मसृष्टि की सिरदार बन गई।

साख गुन पख इंद्रियां, आतम परआतम साख।
सास्त्र सब ब्रह्मांड के, देत भाख भाख कई लाख।। ३१ ।।

इस बात की गवाही, मेरे गुण, पक्ष (अंतःकरण) इन्द्रियां, आत्मा, परआतम तथा संसार के सभी शास्त्र अनेक भाषाओं में देते हैं।

Nijanand App

ऐसा सुच्छम सरूप देखाए के, दे धाम करी चेतन।
इत विलास कई बिध के, मांहें सिरदारी सैयन।। ३२ ।।

परमधाम का ऐसा सूक्ष्म (चेतन) स्वरूप दिखाकर तथा परमधाम की पहचान कराकर वहां के कई तरह के सुखों को बताया। ब्रह्मसृष्टियों में मुझे सिरदार बना दिया।

ऐसी साख देवाई कर सनमंध, आतम करी जाग्रत।
सो आए धनी मेरे धाम से, कही विवेके कयामत।। ३३ ।।

ऐसी गवाहियां दिलवा कर निसबत की पहचान कराई जिससे मेरी आत्मा जागृत हो गई। मेरे धाम के धनी ने आकर के कयामत के भेद भी बताए।

ऐसे कई सुख परआतम के, अनुभव कराए अंग।
तो भी इस्क न आइया, नेहेचल धनी सों रंग।। ३४ ।।

धनी ने परआतम के ऐसे कई सुखों का अनुभव कराया। फिर भी मेरे अन्दर इश्क नहीं आया और न अखण्ड में धनी से मिलने की चाहना हीं आई।

इन धाम की लीला मिने, इन धनी की अरधांग।
तो भी प्रेम ना उपज्या, कोई आतम भई ऐसी अंध।। ३५ ।।

मैं उस परमधाम में धनी की अंगना हूं और आनन्द की लीला करती हूं। इतना समझकर भी मुझे प्रेम नहीं आया। आत्मा ऐसी अन्धी हो गई।

तब आप अंतरध्यान होए के, भेज दिया फुरमान।
हम को इस्क उपजावने, इत कई बिध लिखे निसान।। ३६ ।।

तब आप सतगुरु श्री देवचन्द्रजी के तन को छोड़कर अन्तर्ध्यान हो गए और हम में इश्क पैदा करने के लिए हवसा में विरह की वाणी बख्शीश की जिससे घर की पहचान होती है।

इन बिध देने ईमान, उपजावने इस्क।
सो इस्क बिना न पाइए, ए जो नूर तजल्ला हक।। ३७ ।।

इस तरह से ईमान देने के लिए और इश्क पैदा करने के लिए धनी ने मेहर की, क्योंकि इश्क के बिना पारब्रह्म धाम धनी की पहचान नहीं की जा सकती।

॥ प्रकरण ॥ ७४ ॥ चौपाई ॥ ९९६ ॥

राग श्री साखी

मेरे धनी धाम के दुलहा, मैं कर न सकी पेहेचान।
सो रोऊं मैं याद कर कर, जो मारे हेत के बान।। १ ।।

हे मेरे धनी! धाम के दूल्हा मैं आपको पहचान नहीं सकी। आपने मुझे मेरी भलाई के वास्ते जो बातें बताई थीं, उन वचनों को याद कर मैं अब रोती हूं।

सोई दरद अब आइया, लग्या कलेजे घाए।
अब ए अचरज होत है, जो मुरदे रहत अरवाहे।। २ ।।

अब उन्हीं बातों के याद आने से कलेजे में घाव लग रहे हैं। फिर भी हैरानी इस बात की है कि यह तन खड़ा क्यों है? मर क्यों नहीं जाता?

Nijanand App